यों तो संसार में हजारों साधनाएं हैं, परन्तु उन सबमें वीर साधना अपने आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। जो लोग साधना के क्षेत्र में हैं, वे इस बात के महत्व और गोपनीयता को जानते हैं। इसी कारण उच्च कोटि के साधक अपना सब कुछ दांव पर लगाकर भी वीर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखते हैं।

वीर साधना का तात्पर्य ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर वीर वश में रहकर काम करने वाला बन जाए तो, फिर चिन्ता ही किस बात की?

वीर विक्रमादित्य की कहानी सर्वविदित है कि उन्होंने एक वीर वश में कर रखा था और वह हमेशा उनके नियन्त्रण में रहते हुए उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहता था। जब भी जो आज्ञा विक्रमादित्य देते वह एक पल में ही उस कार्य को पूरा कर देता। विक्रमादित्य ने उस वीर की सहायता से ही अपने सारे शत्रुओं को काबू में किया। उस वीर की सहायक से ही, जब राज्य पर पड़ोस की फौजें चढ़ आयीं तो पूरी फौज का सफाया किया। वीर की सहायता से ही विक्रमादित्य ने अपने राज्य में अपार धन-सम्पत्ति जोड़ ली और उसी की सहायता से वह सारे संसार में विख्यात हुए।

रामभक्त हनुमान ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, इसीलिए उनको 'महावीर' हनुमान कहते हैं। उस वीर की सहायता से वह चार सौ योजन का समुद्र एक ही छलांग में पार कर सके थे। ऐसे वीर की सहायता से ही वह लंका के अशोक वन को तहस-नहस कर अपनी धाक जमा सके और उस वीर साधना से ही बड़े से बड़े पर्वत को गेंद की तरह हथेली में लेकर कहीं पर भी फेंक सकते थे।

शंकराचार्य ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी। जिसकी वजह से चौबीसों घण्टे उनकी सुरक्षा बनी रहती थी। वीर की सहायता से ही जब वह जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते, वीर उनका सही मार्ग दर्शन करता, जंगल के हिंसक पशुओं से भी रक्षा वही करता। वीर की सहायता से ही शंकराचार्य ने अकेले ही पूरे भारतवर्ष में हिन्दू धर्म को पुनः स्थपित करने में सफलता पाई। वह स्वयं इस बात को स्वीकार करते थे कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएँ सम्पन्न की

हैं, परन्तु वीर साधना के द्वारा ही मैंने जीवन की पूर्णता, यश, सम्मान और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

गुरु गोरखनाथ वीर साधना के तो आचार्य ही थे और उनके शिष्यों को इस बात का गर्व था कि गुरु गोरखनाथ ने वीर को सिद्ध किया है, जिसकी वजह से वह तंत्र के क्षेत्र में पूर्ण सफलता पा सके। यद्यपि कई लोगों ने मिलकर गुरु गोरखनाथ को मारने की चेष्टा की परन्तु अकेले गुरु गोरखनाथ सैकड़ों लोगों से मुकाबला कर सके और विजय प्राप्त कर गए।

वीर

जिस प्रकार 'भूत साधना' या 'शून्य साधना' सम्पन्न कर जीवन की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है, उसी प्रकार 'वीर साधना' के द्वारा भी संसार का कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। वीर का तात्पर्य एक मजबूत, बलवान, क्षमाशील और चतुर व्यक्तित्व से है। 'वीर' का ताप्पर्य एक ऐसे महान् व्यक्तित्व से है, जो अत्यधिक सरल, भलाई करने वाला प्रत्येक प्रकार की मुसीबत में सहयोग देने वाला और अपने मालिक के कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में हल करने वाला है।

यह साधना वास्तव में अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, अपने अंतिम समय में गुरु अपने शिष्य को ही यह महत्वपूर्ण साधना समझाते और उसे पूर्ण सिद्धि योगी बना देते हैं।

आज के युग में भी जहां कई योगी और संन्यासी इस साधना में सिद्ध है, वहीं कई गृहस्थ भी इस साधना को सम्पन्न कर सफलता पा सके हैं। सद्‌गुरुदेव के कई गृहस्थ शिष्य हैं, जिन्होंने सफलता पूर्वक इस साधना को सिद्ध किया और पूर्ण सफलता पाई है, उन सभी ने एक स्वर से कहा है कि वास्तव में यह अद्वितीय साधना है। इस साधना को संपन्न करने पर किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती और न साधना काल में किसी प्रकार का कोई भय ही पैदा होता है। गायत्री उपासक है सरल सौम्य गृहस्थ साधक भी इस साधना को संपन्न कर सकते हैं।

साधना विधि

सद्‌गुरुदेव ने कहा था कि मैं नहीं चाहता कि कोई भी विद्या गोपनीय रहे। अत: इस देवदुर्लभ साधना को भी प्रस्तुत कर रहा हूँ और मुझे विश्वास है कि आप इस साधना को संपन्न कर सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

यह साधना मात्र 14 दिन की है और **काली हकीक माला** में ही मंत्र जप संपन्न करना चाहिए। इस साधना को संपन्न करने के लिए निम्न पांच नियम हैं–

1. किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें। रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर लाल धोती पहनकर बैठ जाएं। आधा किलो गेहूं के आटे से मनुष्य की आकृति का पुतला बनाएं और उसे सिन्दूर से रंग दें। इसे ही वीर कहते हैं। अब पास में तेल का दीपक जलाएं और वीर के पास ही **'वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र' (लॉकेट)** स्थापित कर दें।
2. नित्य रात्रि को हकीक माला से 15 माला मंत्र जप करें। इसमें एक घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता। मंत्र जप **'वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र'** के सामने करें। इसमें यंत्र का ही सर्वाधिक महत्व है।
3. साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत से रहें। एक समय भोजन करें और मंत्र जप करें, यदि बीच में कोई अनुभव हो तो भी नहीं बताएं।
4. जब साधना संपन्न हो जाए, तो 15वें दिन उस वीर को जंगल में दक्षिण दिशा की ओर रख दें और कहें कि मैं जब भी तुझे आज्ञा दूं, तू उपस्थित होगा और आज्ञा पालन करेगा। इसके अलावा हर क्षण अदृश्य रूप में मेरे सामने उपस्थित रहना तथा मेरी रक्षा करना। उस यंत्र को लाल धागे में अपनी दाहिनी भुजा पर बांध लें।
5. साधना संपन्न होने के बाद जब पांच बार मंत्र उच्चारण कर वीर को आवाज दी जायेगी, तो वह उपस्थित होगा और उस समय आप उसे जो भी उचित एवं मर्यादित आज्ञा देंगे, वह तुरन्त आज्ञा का पालन करेगा।

गोपनीय वीर यंत्र

ॐ ह्रीं हं वीराय प्रत्यक्षं भव ह्रीं ह्रां फट्।

यह अद्वितीय और गोपनीय साधना वरदान स्वरूप है और साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही संपन्न करें।

यह साधना एक विशिष्ट साधना है, इस साधना के पूर्व गुरु मंत्र का एक अनुष्ठान अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री- 450/-